International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume X, Issue II, March – April 2023 **Available online at: www.ijaur.com**
Impact Factor- 5.937

भारतीय दर्शन एवं हिन्दुत्व दर्शन की सामाजिक सांस्कृतिक वैचारिकी का तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन

श्रीमती कीर्ति राठौर
ज्ञानचंद्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह (म.प्र.)

सारांशः— भारतीय समाज अपनी विविधताओं के कारण सम्पूर्ण विश्व में जाना जाता है। जो इसकी अनेक विशेषताओं में से एक है। यही विविधता इसकी एकता का मूल आधार है। ऐतिहासिक प्रमाण भी इसकी सामाजिक, सांस्कृतिक विविधताओं की पुष्ठी करते है। विविधताओं के कारण ही भारतीय दर्शन श्रेष्ठ दर्शनों में गिना जाता है। भारतीय दर्शन का स्वरूप किसी विशेष विचारधारा का कभी भी नहीं रहा है। अपितु अनेको दर्शनों एवं विचारधाराओं से इसका निर्माण हुआ है। भारतीय समाज दर्शन एकता एवं अखण्डता का प्रतीक है। यदि भारतीय दर्शन की तुलना हिन्दुत्व दर्शन से की जाए तो वह केवल हिन्दू विशेषकर सनातनी हिन्दू, आर्य या ब्राह्मणी दर्शन को प्रदर्शित करता है। हिन्दुत्व दर्शन की संकीर्णता ने ही वर्ण एवं जाति व्यवस्था को धार्मिक स्वरूप प्रदान कर कभी भी भारतीय आबादी को एक सूत्र में बंधने नहीं दिया।

अतः प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से यह खोजने का प्रयास किया गया है, कि भारतीय दर्शन और हिन्दुत्व दर्शन दो विविध दर्शन है जहा भारतीय दर्शन व्यापकता को दर्शता है, वही हिन्दुत्व दर्शन नृजाति श्रेष्ठता की मानसिकता को दर्शता है। यही कारण है कि वर्तमान समय में प्रभावी होता नव हिन्दूवाद या हिन्दुत्व राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं सम्प्रभुता को चुनौती दे रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप साम्प्रादिक उन्माद पैदा हो रहा है।

मुख्य शब्दः— भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, हिन्दुत्व तथा हिन्दु, नव हिन्दुवाद या सिंडीकेटड हिन्दुवाद।

प्रस्तावनाः—

भारत के इतिहास में यदि नजर डाली जाए तो कभी भी यहाँ कोई एक विशेष संस्कृति नहीं रही है बल्कि यहाँ साझा संस्कृतियां पाई रहीं है। भारतीय समाज की संरचना के संबंध में कई बाते एक साथ कही जाती है और कही—कही तो एक बात दूसरी बात के ठीक विपरीत दिखाई देती है। यह कहा जाता है कि भारतीय समाज में विविधता है और उसी सांस में यह भी कहा जाता है कि इस समाज में एकता है और निरंतरता है।[1]

देखा जाए तो भारतीयों की अपनी एक संस्कृति है यह संस्कृति दर्शन, परम्परा, इतिहास, पौराणिक और कल्पित कथाओं के मेल—जोल से तैयार हुई है और इनके विविध अंगो को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता परंतु यदि भारतीय दर्शन के अंदर एक विशेष दर्शन, हिन्दुत्व दर्शन की बात करे तो यह नृजातीयता की श्रेष्ठता को दर्शाता है जो विशेषकर आर्य या ब्रह्मणी या सनातनी व्यवस्था एवं संगठन को प्रदर्शित करता है जिसमें समानता एवं समाजिक न्याय से संबंधित विचारों को प्राथमिकता नहीं दी गई है।

हिन्दुत्व विचारधारा समाजिक संर्कीणता एवं संकुचित दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है जबकि भारतीय दर्शन एवं विचारधारा लोगों की सामूहिकता एवं सहअस्तिव की धारणा से बनी है पराधीनता से स्वाधीनता तक का संघर्ष हमने भारतीय और 'भारत माता की जय' उद्घोष वाक्य से प्राप्त किया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना 'हम भारत के लोग' से प्रांरभ होती है जिसमें धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य की संकल्पना के साथ सभी नागरिकों को समाजिक न्याय एवं स्वतंत्रता, समानता तथा बन्धुत्व के आदर्शो को प्राथमिकता दी गई भारतीयता हमारी एकता अखण्डता को दिखाता है जबकि हिन्दुत्व दर्शन एक विशेष विचारधारा का प्रतीक है जो भारतीय राष्ट्र एवं दर्शन की तुलना में न तो व्यापक है और न ही न्यायपूर्ण।

भारतीय 'भारतीय' 'शब्द अपने में किसी संर्कीण पहलू को समेटे हुए नहीं है, वरन यह 'शब्द तो समस्त राष्ट्र प्रतीक है। इस शब्द से 'राष्ट्र स्थायित्व' का बोध होता है। यह हमें किसी एक समुदाय, प्रान्त, जाति अथवा इकाई की विचारधारा के अध्ययन के लिए नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय संदर्भ में चिंतन विभिन्न धाराओं के अध्ययन के लिए उत्प्रेरित करता है। यह शब्द इस बात का भी संकेत है कि हम राष्ट्रवाद के

समूचे दर्शन का विश्लेषण करने के आकांक्षी है, किन्ही उपराष्ट्रवादी विभक्तियों का नहीं।[2]

भारतीय सभ्यता और संस्कृति भारतीय सभ्यता और संस्कृति में समन्वय शक्ति सदा से विद्यमान रही है। एक और इसने अपनी मौलिक विशेषताओं को बनाए रखा है वहीं दूसरी ओर अन्य सभ्यताओं और संस्कृतियों की अनेक बातों को भी अपने में आत्मसात किया है। किस प्रकार पिछले 5000 वर्षों से यह समाज खंडित रहा और खंडित होकर भी किस भांति इसने अपने आप को बनाए रखा। मतलब हुआ इस समाज को कुछ शक्तियां या कहिए कि कुछ ताकतें या संस्थाएं बराबर कमजोर करती रही है और कुछ ऐसी संस्थाएं भी है जो इसे बराबर बनाए रखती हैं।[3]

हिंदुत्व तथा हिंदू 'हिन्दुत्व' शब्द को इसके मूल अर्थ के प्रकाश में, इसके मध्ययुगीन अर्थों तथा समाकालीन अर्थ में समझना उचित होगा। मूल अर्थ में हिंदुत्व की धारणा को वेदों उपनिषदों तथा भगवतगीता आदि ग्रंथों से लिया गया है। तत्पश्चात, ऐसा समय भी आया जब कि कुछ ब्राह्मण आचार्यों ने धार्मिक साहित्य की पुनः व्याख्या की और कुछ प्रथाओं एवं विश्वासों को महत्वपूर्ण एवं निर्णायक बताया। इनमें से कुछ प्रथाएं व विश्वास थे सती प्रथा, नर बलि, देवदासी,बाल विवाह, पशु बलि के द्वारा ग्राम देवी की पूजा, शक्ति उपासना में विश्वास आदि। तत्पश्चात, विशेषकर मुगल काल के बाद, कुछ शिक्षित बुद्धिजीवी हिंदुओं ने इन विश्वास और प्रथाओं को अशिष्ट, धृष्ट व बर्बर बताया तथा हिंदुत्व की इन विशेषताओं के आलोचक हो गए। उन्होंने सुधार की बात कहकर सुधार आंदोलन भी प्रारंभ किए जैसे ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन आदि। हाल ही में हिंदुत्व पर चर्चा व आंदोलन ने राजनैतिक उद्देश्यों के साथ मुलम्मा चढ़ा दिया गया है और हिंदुत्व को एक भिन्न बिंदु प्रदान कर दिया गया है। नव हिंदूवाद जो कि आजकल परिषदों, संघों तथा समाजों के आलोक में प्रसारित किया जा रहा है मौलिक हिंदू धर्म को एकेश्वरवादी समरूप धर्म के रूप में पुनः गठित करने का प्रयत्न है। यह मान्यता मूल हिंदू धर्म के आवश्यक तत्वों से विचलन प्रतीत होती है।[4]

नव हिंदूवाद या सिंडीकेटेड हिंदूवादः– नव हिंदूवाद अथवा सिंडीकेटेड हिंदूवाद परिमाप व विस्तार दोनों में मूल हिंदूवाद से भिन्न है। यह नवीन संप्रदाय की रचना नहीं है, बल्कि एक नवीन धार्मिक ग्रुप है जिसमें पूर्ववर्ती सभी संप्रदायों के समायोजन का प्रयत्न किया गया है। इस सिंडीकेटेड हिंदू धर्म के उद्भव का उद्देश्य धार्मिक लक्ष्यों की नहीं अपितु राजनीतिक हितों की पूर्ति करना है। इसलिए इसको राजनैतिक हिंदूवाद कहा जाता है। अतः नव हिंदूवाद उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी में अपरिहार्य हो गया। बीसवीं शताब्दी के नव हिंदूवादी आंदोलनों विशेष रूप से आजादी के बाद के आंदोलनों को राजनैतिक मोड़ दिया गया था और आज भी उनकी पहचान उन्हीं उद्देश्यों से बनी हुई है।[5]

पूर्व अध्ययन की समीक्षाः– राम अहूजा (2012)[6] ने अपनी शोधपूर्ण पुस्तक में हिंदू दर्शन निरंतरता और परिवर्तन में हिंदुत्व से संबंधित विचार धाराओं को स्पष्ट किया उन्होंने मूल अर्थ में हिंदुत्व की अवधारणा को वेदों, उपनिषदों तथा भगवत गीता आदि ग्रंथों से लिया गया। नव हिंदूवाद या सिंडीकेटेड हिंदूवाद परिमाण व विस्तार दोनों में मूल हिंदू वाद से भिन्न है। यह नवीन संप्रदाय की रचना नहीं है

बल्कि एक नवीन धार्मिक रूप है जिसमें पूर्वर्ती सभी संप्रदायों के समायोजन का प्रयत्न किया गया है; इस सिंडीकेटेड हिंदू धर्म के उद्भव का उद्देश्य धार्मिक लक्षण कि नहीं अपितु राजनीतिक हितों की पूर्ति करना है इसलिए इसको राजनैतिक हिंदूवाद भी कहा जाता है।

अध्ययन के उद्देश्यः– भारतीय समाज–संस्कृति एवं हिन्दुत्व समाज–संस्कृति के प्रति युवाओं के विचारों का अध्ययन करना।

उपकल्पनाः– भारतीयता की भावना हिन्दुत्व की भावना की तुलना में अधिक व्यापक एवं समानतावादी है।

अध्ययन विधि एवं अध्ययन क्षेत्रः– प्रस्तुत शोध आलेख ज्ञान चंद्र श्रीवास्तव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय दमोह में अध्ययन करने वाले स्नातकोत्तर स्तर के विभिन्न धर्मो एवं जातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यार्थियों पर केन्द्रित हैं। अध्ययन में वर्णत्मक एवं सह–विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया गया है। तथा उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति के आधार पर 50 (जिनमें 10 सामान्य जाति के, 20 अन्य पिछडा वर्ग के, 05 अनुसूचित जाति के, 05 अनुसूचित जनजाति के तथा अल्पसंख्यकों में 05 जैन एवं 05 मुस्लिम धर्म के है।) सूचनादाताओं से साक्षात्कार अनुसूची कें माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है।

सारणी क्रमांक 1–आप अपने आप को क्या कहने में अधिक गर्व महसूस करते है?

क्र	गर्व करने की स्थिति	अभिमत	प्रतिशत
1	भारतीय	48	96.00
2	हिन्दू/मुस्लिम/सिख/ईसाई/जैन/बौद्ध/अन्य	01	2.00
3	ब्राह्मण/क्षत्रिय/वैश्य/शूद्र/अछूत/आदिवासी/अन्य	01	2.00
4	बंगाली/मराठी/गुजराती/तेलगू/कश्मीरी/अन्य	–	–
5	शर्मा/जाट/पटैल/अहीर/मोची/धोबी/अन्य	–	–
कुल योग		**50**	**100**

उपरोक्त सारणी क्रमांक 01 में सूचनादाताओं को गर्व महसूस किये जाने की स्थिति को स्पष्ट किया गया है । जिसमें सर्वाधिक 96.00 प्रतिशत सूचनादाताओं ने अपने आपको भारतीय कहने पर गर्व महसूस करने की स्थिति को स्पष्ट किया 2.00 प्रतिशत सूचनादाता अपने आपको धर्म के आधार पर हिन्दू/मुसलिम /सिक्ख/ईसाई/बौद्ध/जैन/अन्य होने पर गर्व महसूस करते है। इसी प्रकार 2.00 प्रतिशत सूचनादाता अपने आपको ब्राह्मण/क्षत्रीय/वैश्य/शूद्र/अछूत/आदिवासी/अन्य होने पर गर्व, महसूस करते है। जबकि भाषायी आधार पर बांगाली/मराठी/गुजराती तथा जाति आधार पर शर्मा/जाट/पटेल आदि में गर्व न करने के मत को स्पष्ट किया है।

सारणी क्रमांक 2

देश में रहने वाले सभी लोगो को क्या कहना ज्यादा समानता एवं भाईचारे की भावना को दर्शाता है?

क्र.	एकता, समानता एवं भाईचारे की भावना	अभिमत	प्रतिशत
1	भारतीय	47	94.00
2	हिन्दू/मुस्लिम/सिख/ईसाई/जैन/बौद्ध/अन्य	02	4.00
3	ब्राह्मण/क्षत्रिय/वैश्य/शूद्र/अछूत/आदिवासी/अन्य	01	2.00
4	बंगाली/मराठी/गुजराती/तेलगू/क"मीरी/अन्य	–	–
5	शर्मा/जाट/पटैल/अहीर/मोची/धोबी/अन्य	–	–
कुल योग		**50**	**100**

उपरोक्त सारणी क्रमांक 02 में सूचनादाताओं द्वारा देश में रहने वाले लोगों को किस समूह का सदस्य कहने में अधिक एकता/समानता एवं भाईचारे की भावना का प्रदर्शन होता है। के संदर्भ में पाया गया कि सर्वाधिक 94.00 प्रतिशत सूचनादाता भारतीय समूह के सदस्य होने को एकता/समानता एवं भाईचारे की भावना से जोड़ते है। इसी क्रम में 4.00 प्रतिशत सूचनादाताओं में धर्म के आधार पर हिन्दू/मुसलिम/सिक्ख या अन्य कहे जाने को समानता/एकता एवं भाईचारे की भावना को बताया वहीं 2.00 प्रतिशत सूचनादाताओं ने वर्ण के आधार को तथा भाषाई एवं जाति के आधार को किसी भी सूचनादाता ने एकता/समानता एवं भाईचारे की भावना के रूप में नहीं माना।

सारणी क्रमांक 3 – क्या भारतीय समाज संस्कृति और हिन्दुत्व समाज संस्कृति दोनो एक ही है?

क्र.	एक समान समझना	अभिमत	प्रतिशत
1	हाँ	09	18.00
2	नहीं	41	82.00
कुल योग		**50**	**100**

उपरोक्त सारणी क्रमांक 03 में भारतीय समाज–संस्कृति (दर्शन) एवं हिन्दू समाज–संस्कृति (दर्शन) को एक समझनें की स्थिति को दर्शाया गया है। जिसमें 82.00 प्रतिशत सूचनादाता दोनों संस्कृति (दर्शन) को एक नहीं मानते जबकि 18.00 प्रतिशत सूचनादाता भारतीय समाज संस्कृति (दर्शन) एवं हिन्दू समाज संस्कृति (दर्शन) दोनो को एक ही मानते है।

सारणी क्रमांक 3 (A) – भारतीय समाज संस्कृति एवं हिन्दुत्व समाज संस्कृति दोनो को एक न मानने के कारण

क्र.	कारण	कुल सूचनादाता	अभिमत	प्रतिशत
1	भारतीय समाज संस्कृति के अतर्गत विभिन्न समाज संकृतियां आती है।	41	39	95.12
2	भारतीय समाज संस्कृति, हिन्दुत्व समाज संस्कृति की तुलना में व्यापक है।	41	39	95.12
3	भारतीय दर्शन समानता पर आधारित है जबकि हिन्दुत्व दर्शन जातिवाद एवं ऊंच नीच की भावना पर आधारित है।	41	40	97.56
4	भारतीय दर्शन में सुरक्षा की भावना जबकि हिदुत्व दर्शन में असुरक्षा व भय है।	41	38	92.68
5	भारतीय समाज सहअस्तिव की भावना से बना है जबकि हिन्दुत्व में सहअस्तिव की भावना नहीं है।	41	38	92.68
कुल योग		**205**	**194**	**94.63**

उपरोक्त सारणी क्रमांक 03 (A) भारतीय समाज संस्कृति (दर्शन) एवं हिन्दुत्व समाज संस्कृति (दर्शन) दोनों को एक नहीं मानने के कारण को दर्शाया गया है। जो की सारणी क्रमांक 03 के 41.00 (82.00) प्रतिशत वे सूचनादाता है जो सारणी–क्रमांक 03 में 41.00 (82.00 प्रतिशत) सूचनादाता दोनो दर्शन को एक नहीं मानते। जिनके कारणों में 95.12 प्रतिशत सूचनादाताओं का मानना है की भारतीय समाज संस्कृति (दर्शन) के अन्तर्गत विभिनन्न समाज–संस्कृतियां आती है। इसी प्रकार 95.12 प्रतिशत सूचनादाताओं ने भारतीय समाज सस्कृति (दर्शन) को हिन्दुत्व समाज संस्कृति (दर्शन) की तुलना में अधिक व्यापक बताया। 97.56 प्रतिशत सूचानादाताओं ने भारतीय दर्शन को समानता पर आधारित तथा हिन्दुत्व दर्शन को जातिगत ऊँच–नीच की भावना पर आधारित बताया वहीं 92.68 प्रतिशत सूचनाओं दाताओं ने भारतीय दर्शन में सुरक्षा की भावना इसी प्रकार हिन्दुत्व दर्शन में असुरक्षा की भावना को बताया। तथा 92.68 प्रतिशत सूचनादाताओं ने भारतीय दर्शन में सहअस्वित की भावना के अतः हिन्दुत्व दर्शन में सहअस्तित्व की भावना के अभाव को व्यक्त किया।

सारणी क्रमांक 4 – क्या सभी हिन्दू आपस में एक समान है?

क्र	समानता की स्थिति	अभिमत	प्रतिशत
1	हाँ	12	24.00
2	नहीं	38	76.00
	कुल योग	**50**	**100.00**

उपरोक्त सारणी क्रमांक–04 में सभी हिन्दुओं के आपस में एक समान होने की स्थिति को दर्शाया गया है। जिसमें 76.00 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सभी हिन्दुओं को आपस में एक समान नहीं होने के मत को व्यक्त किया तथा 24 प्रतिशत सूचनादाताओं ने सभी हिन्दुओं के आपस में समान होने की बात के प्रति सहमति व्यक्त की है।

सारणी क्रमांक 4 (A) - सभी हिन्दू अपने आप को आपस में एक समान नहीं समझते के क्या कारण है?

क्र.	कारण	कुल सूचनादाता	अभिमत	प्रतिशत
1	वर्ण एवं जाति के कारण	38	36	94.73
2	पवित्रता एवं अपवित्रता के कारण	38	27	71.05
3	उच्चता एवं निम्नता के कारण	38	36	94.73

4	निषेध एवं विशेषाधिकार के कारण	38	29	76.32
5	जन्म एवं रंग के आधार पर	38	31	81.56
6	व्यवसाय, खानपान एवं पहनावा आदि के कारण	38	34	89.47
कुल योग		**228**	**193**	**84.64**

उपरोक्त सारणी क्रमांक–04 (A) सभी हिन्दुओं आपस में अपने आपको समान नहीं मानते से सम्बंधित कारणों को स्पष्ट किया गया है। सारणी क्रमांक 04 में 38 (76.00 प्रतिशत) सूचनादाताओं द्वारा मत व्यक्ति किया गया था की सभी हिन्दू आपस में अपने आपको एक समान नहीं मानते। जिसके कारणों में 97.73 प्रतिशत सूचनादाताओं ने वर्ण एवं जाति को असमानता का कारण बताया। 71.05 प्रतिशत ने पवित्रता एवं अपवित्रता की धारणा को 94.73 प्रतिशत ने उच्चता एवं निम्नता की भावना को 76.32 प्रतिशत ने निषेध एवं विशेषाधिकार तथा 81.56 प्रतिशत ने जन्म तथा रंग के आधार पर तथा 89.47 प्रतिशत ने व्यवसाय, खानपान एवं पहनावा आदि के कारण सभी हिन्दू आपस में अपने आप को एक समान नहीं समझते है।

सारणी क्रमांक 5 – क्या हिन्दू धर्म में धर्मान्तरण करने पर जाति कोई समस्या है?

क्र	जाति की समस्या	अभिमत	प्रतिशत
1	हाँ	46	92.00
2	नहीं	04	08.00
	कुल योग	**50**	**100.00**

उपरोक्त सारणी क्रमांक–05 में हिन्दू धर्म में धर्मान्तरण करने पर जाति की समस्या को दर्शाया गया है। जिसमें 92.00 प्रतिशत सूचनादाताओं का मानना है कि हिन्दू धर्म में धर्मान्तरण करने में सबसे बड़ी बाधा या समस्या जाति की है। जिसमें धर्मान्तरित व्यक्ति किस जाति की सदस्यता ग्रहण करेगा क्योंकि जाति तो जन्म पर आधारित है। जो जन्म से लेकर मृत्यु तक नहीं बदलती जबकि 8. 00 प्रतिशत सूचनादाताओ ने हिन्दू धर्म धर्मान्तरण में जाति को कोई समस्या नहीं माना।

सारणी क्रमांक 6 – क्या भारतीय समाज का सदस्य बनने पर जाति कोई समस्या है?

क्र	जाति की समस्या	अभिमत	प्रतिशत
1	हाँ	03	06.00
2	नहीं	47	94.00
	कुल योग	**50**	**100.00**

उपरोक्त सारणी क्रमांक–06 में भारतीय समाज का सदस्य बनने पर जाति की समस्या को दर्शाया गया है। जिसमें 94. 00 प्रतिशत सूचनादाताओं का मानना है की भारतीय समाज का सदस्य बनने में जाति कोई बाधा या समस्या नहीं है क्योकि भारतीय संविधान नागरिकता के कुछ नियमों के आधार पर व्यक्ति को भारतीय समाज की सदस्यता प्रदान करता है जबकि 6.00 प्रतिशत सूचनादाताओं ने भारतीय समाज की सदस्यता में जाति को समस्या के रूप में माना है।

तथ्यों का विश्लेषणः–

शोध से प्राप्त तथ्यों में सूचनादाताओं ने भारतीय समाज–संस्कृति (दर्शन) एवं हिन्दुत्व समाज संस्कृति (दर्शन) दोनों को एक नहीं माना हैं। दोनों में कुछ भिन्नताएँ है। इसे समान या पर्यायवाची नहीं समझा जाना चाहिए। युवाओं द्वारा जाति धर्म, भाषा एवं क्षेत्र की अपेक्षा भारतीय समझना अधिक गर्व महसूस कराता है जिसमें समानता एवं भाईचारे जैसी भावना समाहित है। जबकि हिन्दुत्व का दर्शन समानता एवं भाईचारे के स्थान पर ऊंच–नीच, पवित्रता–अपवित्रता तथा जन्म के आधार पर भेद करता है। यह भारतीय दर्शन के समान व्यापक नहीं है। यह एक धर्म विशेष को मानने वालों की सामाजिक सास्कृतिक दर्शन को व्यक्त करता है।

उपकल्पनाओं का सत्यापनः–

प्रस्तुत शोध आलेख हेतु एक उपकल्पना निर्मित की गई जिसमें भारतीय दर्शन एवं हिन्दुत्व के दर्शन की तुलना की

गई। सारणी क्रमांक 01 और 02 के परिणाम तथा सारणी क्रमांक 04 व 4 (A) के परिणाम उपकल्पना की वैधता की पुष्टी करते है। जिससे स्पष्ट है की भारतीय समाज दर्शन हिन्दुत्व समाज दर्शन की तुलना में व्यापक व श्रेष्ठ है।

निष्कर्ष एवं सुझावः–

प्रस्तुत शोध आलेख से प्राप्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है की भारतीय समाज दर्शन अपने आपमें एक वृहद एवं विशाल दर्शन है। जिसमें विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदाय, नस्ल, भाषा, क्षेत्रीयता आदि सभी प्रकार की विचारधारा समाहित है। भारतीय समाज दर्शन समुद्र के समान विशाल एवं प्रभावी है। जिसे हिन्दुत्व दर्शन का पर्यायवाची नहीं माना जाना चाहिए दोनों ही दर्शन पृथक–पृथक है हलांकि बहुसंख्यक हिन्दू धर्म एवं जीवन शैली के अनुसार व्यवहार करते प्रतीत होते है परन्तु आंतरिक रूप से उनमें अनेक जटिलताएं है। जिसमें संकुचित भावना निहित है। जिसे मिटाने का प्रयास बुद्ध से लेकर पुनर्जागरण के अग्रदूत राजराम मोहन राय एवं अनेकों बुद्धिजीवीयों द्वारा समय–समय पर सुधार कार्यक्रम चलाकर समाप्त करने का प्रयास किया जाता रहा है।

सुझावः– वर्तमान समय में देश के सामाजिक, आर्थिक विकास हेतु भारतीय की भावना लोकतांत्रिक आदर्शो को पूरा करने वाली है। अतः युवाओं को संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए क्योकि हमारे संविधान की प्रस्तावना भी 'हम भारत के लोग' से प्रारंभ होती है।

संदर्भ–सूची

1. दोषी, एस. एल एवं पी. सी. जैन (2002) भारतीय समाजः संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ. सं. 09
2. अवस्थी, ए. एवं आर. के. अवस्थी (2011) आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. सं. 02
3. दोषी, एस. एल एवं पी. सी. जैन (2002) भारतीय समाजः संरचना और परिवर्तन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, पृ. सं. 34
4. आहूजा, राम (2012), भारतीय सामाजिक व्यवस्थां, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, पृ. सं. 11
5. वहीं पृ सं. 10
6. आहूजा, राम (2012), भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।